भगत रविदास – सबद २१

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥

रागु धनासरी, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ६९४

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥
बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥१॥
हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥
कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥
बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्मारे लेखे ॥
कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥२॥१॥

सार: अहं कठोर सीमाओं के अंदर काम करता है, मापता है, तुलना करता है और स्वयं का बचाव करता है। यह सब हमारे नज़रिये को सीमित कर, तनाव पैदा करता है। इसके विपरीत, विनम्रता हमें चीज़ों को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करती है जिससे सुनने, सीखने और हर तरह से मानसिक/शारीरिक तरीके से स्वस्थ्य होने के लिए जगह बनाती है। जहाँ अहं हर क्षण को आत्म-मूल्य के निर्णय में बदल देता है वहीं विनम्रता उन्हीं क्षणों को आत्म-विकास के अवसर में बदल देती है। दयालुता अक्सर मुश्किल लगती है क्योंकि अहं इसे नियंत्रण को खोने के रूप में देखता है और इसी भय के कारण हम रुक जाते हैं। यह संकोच वास्तव में अहं की रक्षा करने की प्रवृत्ति है। हालाँकि, विनम्रता एक ऐसी ताकत है जो हमें असुरक्षा से मुक्त कराती है और दया को स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होने देती है।

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥
मेरे समान कोई कमज़ोर नहीं है और तुम्हारे जैसी कोई परोपकारी नहीं है। अब तुलना करने से क्या मिलेगा? अहं की सीमाओं और विनम्रता के लाभ के बीच यह अंतर, हमें दयालुता को अपनाने में संकोच पर चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥१॥

मेरा मन सर्वव्यापी ज्ञान को अपनाकर उसके साथ जुड़ गया है, यह विनम्र साधक को पूर्णता की अवस्था प्रदान करता है। यह दर्शाता है कि बौद्धिक समझ प्राप्त करने से अंतर्दृष्टि का अनुभवात्मक एकीकरण संभव होता है। (१)

हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥

मैं सर्व-समावेशी वास्तविकता के लिए अपने सीमित स्वयं को बार-बार अर्पित करने को तत्पर हूँ। यह सभी को जोड़ने वाले सार्वभौमिक सार के साथ संबंध को मज़बूत करने के लिए अहं की पहचान का पूर्ण समर्पण दर्शाता है।

कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥

न कहने का क्या कारण है? यह मौन की शक्ति को दर्शाता है जहाँ जागरूकता, प्रामाणिकता की स्वीकृति पाने की आवश्यकता का स्थान ले लेती है। (विराम)

बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्मारे लेखे ॥

हे सर्वव्यापी चेतना, अस्तित्व के अनगिनत पलों में, मैं तुमसे अलग रहा हूँ। अब, मैं इस क्षण को तुम्हारे साथ फिर से जुड़ने के लिए समर्पित करता हूँ। यह एकता से पिछले अलगाव और पुनः जुड़ने के अवसर को अपनाने की प्रतिबद्धता को स्वीकार करता है।

कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥२॥१॥

रविदास कहते हैं कि वह केवल फिर से जुड़ने की आशा पर जीवित हैं क्योंकि उन्हें स्पष्टता की झलक देखे हुए लंबा समय हो गया है। यह एक साधक के धीरज व सहनशीलताको दर्शाता है जो आध्यात्मिक अंधकार की अवधि के बाद जागरूकता को फिर से खोजने की आशा के सहारे है। (२)(१)

तत्त्व: भगत रविदास ऐसी मानसिक अवस्था को दिखाते हैं जो लंबे समय से स्पष्टता के संघर्ष से गुज़री है और जहाँ भ्रम अक्सर हावी रहता है। इन चुनौतियों के बावजूद, साधक आशा से प्रेरित होकर स्थिर रहता है कि वह अपनी भीतरी जागरूकता से फिर से जुड़ सकता है। इस रोशनी में, परछाइयाँ फीकी पड़ जाती हैं, बेचैनी शांति में बदल जाती है जो यात्रा के प्रति वचनबद्धता दिखाता है। यह परिवर्तन, प्रतीक्षा को स्वयं की खोज और बोध की मौन भक्ति में बदल देता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com